प्रेमचन्द ने निर्मला की चिता के रूप में दहेज प्रथा और वृद्ध-विवाह की कुप्रथा को भस्म किया है।

मानवता से ही प्रेमचन्द में आशावाद के साथ आदर्शवाद आया है। उनके उपन्यासों में प्रेम, सेवा और त्याग के दर्शन सर्वत्र होते हैं। उनकी सहानुभूति व्यापक थी, इसीलिए वे समाज के सभी वर्गों के साथ आत्मीय सम्बन्ध बनाने में सफल होते हैं।

प्रेमचन्द का जीवन-दर्शन सामाजिक क्षेत्र में सुधारवादी, राजनैतिक क्षेत्र में गाँधीवादी, आर्थिक क्षेत्र में समाजवादी और सांस्कृतिक रूप में आदर्शवादी था। इन्होंने दमनकारी और रूढ़ीवादी विचारों का खुलकर विरोध किया है। प्रेमचन्द ने मानवता का गला घोटने वाली सामाजिक रूढ़ियों एवं कुरीतियों पर कठोर प्रहार किया है और मानव-कल्याण को प्रमुख स्थान दिया है। 'निर्मला' उपन्यास में वृद्ध-विवाह पर उन्होंने कड़ा प्रहार किया है।

'निर्मला' उपन्यास में प्रेमचन्द जी यथार्थवाद की स्थापना तो अवश्य करते हैं, परन्तु उसका सन्देश आदर्शवादी है। आदर्श-वाद का एक सुन्दर उदाहरण द्रष्टव्य है- "जिसे अपना बना-बनाया घर उजाड़ना हो- अपने प्यारे बच्चों के गले पर छुरी फेरनी हो, वह बच्चे के रहते हुए विवाह करे। ऐसा कभी नहीं हुआ कि सौत के आने पर घर तबाह न हो गया हो।

'निर्मला' उपन्यास का प्रारम्भ यथार्थवादी घटनाओं से हुआ है, परन्तु अंत आदर्शवाद के साथ हुआ है।

उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द दहेज प्रथा और अनमेल विवाह का यथार्थ चित्रण तो अवश्य किया है, परन्तु निष्कर्ष आदर्शवादी है। अतः हम कह सकते हैं कि 'निर्मला' आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी उपन्यास है।

डॉ० देव चरण प्रसाद [redacted]
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
04/06/21

निबंध माला
लेखक :- आशा किशोर एवं सुरेन्द्र शर्मा
शीर्षक :- गाँधी जी और मैं
लेखक :- पंडित रामनन्दन मिश्र
शास्त्री द्वितीय खण्ड, अ०द्वि०-पत्र- राष्ट्रभाषा हिन्दी
लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :-

1. प्रश्न :- गाँधी जी सन् 1926 में दरभंगा क्यों आये थे?
उत्तर :- निबन्धकार पंडित रामनन्दन मिश्र जी अपने संस्मरणात्मक निबंध में सन् 1926 की चर्चा करते हुए कहते हैं कि स्वतंत्रता आन्दोलन के क्रम में जन-जागरण अभियान के तहत गाँधी जी दरभंगा आये थे। उन्होंने यहाँ पर एक महिला सभा को संबोधित किया था।

2. प्रश्न :- गाँधी जी ने दरभंगा में आयोजित सभा में किस प्रथा का विरोध किया था?
उत्तर :- श्री मिश्र जी अपने निबंध में गाँधी जी द्वारा महिला परदा-प्रथा का कड़ा विरोध किया गया था, इसका विस्तार से वर्णन करते हैं। सभा की समाप्ति के उपरांत वहाँ उपस्थित स्वतंत्रता सेनानियों से कहा कि महिला परदा-प्रथा का आप सब लोग मिलकर विरोध करें। महिला शक्ति को समझने का प्रयास करें। यदि महिलाओं के बीच परदा-प्रथा का प्रचलन बन्द नहीं हुआ तो हमारा आन्दोलन सफल नहीं होगा। इसलिए गाँधी जी द्वारा दरभंगा की सभा में महिला परदा-प्रथा का विरोध किया गया था।

3. प्रश्न :- लेखक गाँधी जी की यात्रा के सम्बन्ध में क्या कहते हैं?

उत्तर :- निबन्धकार अपने निबन्ध में गाँधी जी की यात्रा के सम्बन्ध में विस्तार से वर्णन करते हैं।

शेष आगे —

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र
दिगंत - भाग - 2 - पद्य खण्ड
शीर्षक - 'कवित्त'

कवि - भूषण

सप्रसंग व्याख्या :-

"पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर,
ज्यों सहस्रबाहु पर राम द्विजराज हैं।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत - भाग - 2 के भूषण के 'कवित्त' शीर्षक पाठ से ली गई हैं। इन पंक्तियों में छत्रपति शिवाजी के प्रखर, तेजस्वी व्यक्तित्व का गुण-गान किया गया है। यह प्रसंग शिवाजी की सुकृतियों से संबंधित है।

प्रस्तुत पंक्तियों में महाकवि भूषण कहते हैं जिस प्रकार पवन बादलों को तितर-बितर कर देता है, जिस प्रकार भगवान शिव कामदेव पर अधिकार कर लेते हैं, जिस प्रकार परशुराम सहस्रार्जुन पर विजय पा लेते हैं, ठीक उसी प्रकार शिवाजी भी अपने शत्रु पर विजय पा लेते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि, पवन, भगवान-शिव, परशुराम के व्यक्तित्व के समान ही हमारे राष्ट्र-नायक छत्रपति शिवाजी का व्यक्तित्व है।

उपरोक्त पंक्तियों में महाकवि भूषण ने, पवन, भगवान शिव एवं परशुराम आदि के गुणों से सम्पन्न छत्रपति शिवाजी के चेतना सम्पन्न व्यक्तित्व की प्रशंसा की है। वस्तुतः शिवाजी में देवत्व है, तेजस्विता है, प्रखरता है, शौर्य है और आत्म गौरव भी है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 04/06/21
रा०उ०सं० महावि० मुखसेना, फुर्णियाँ

'निर्मला' उपन्यास
लेखक - मुंशी प्रेमचन्द
शास्त्री प्रथम खण्ड
अनिवार्य द्वितीय-पत्र, राष्ट्रभाषा हिन्दी

प्रश्न :- सिद्ध कीजिए कि जीवन-दर्शन की दृष्टि से 'निर्मला' आदर्शोन्मुखी और यथार्थवादी उपन्यास है।

उत्तर: 'निर्मला' उपन्यास मुंशी प्रेमचन्द की एक महत्वपूर्ण रचना है। प्रेमचन्द जी ने साहित्य के उद्देश्य और प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हुए लिखा है- " साहित्य में जो सबसे बड़ी खूबी है, वह यह है कि हमारी मानवता को दृढ़ बनाता है। उसमें सहानुभूति और उदारता का भाव पैदा करता है। साहित्य हमारी कोमल और पवित्र भावनाओं को जाग्रत करती है।

प्रेमचन्द जी का समस्त उपन्यास साहित्य उनके उक्त कथनों की कसौटी पर खरा उतरता है। प्रेमचन्द जी मानवता के पुजारी थे। धर्म, जाति, सम्प्रदाय और भूखण्ड की सीमाओं से ऊपर थे। उन्होंने मानव-मात्र के यथार्थ धरातल पर अपने उपन्यासों का सृजन किया है। प्रेमचन्द के उपन्यासोंमें उनके जीवन-दर्शन की विशेषताएँ स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

प्रेमचन्द ने मानवतावाद की व्याख्या करते हुए लिखा है- " मानवतावाद से अभिप्राय है, मानव प्राणियों के हित का ध्यान रखना। फिर वह मानव चाहे कोई भी हो और कहीं भी रहे" अपने इसी मानवता को प्रेमचन्द ने अपने जीवन दर्शन का मूलाधार माना है। उनकी दृष्टि से मानव सर्वोपरि है। वे मानव को यथार्थ की परिस्थितियों से उठाकर आदर्श की ओर ले जाते हैं।

प्रेमचन्द आशावादी लेखक हैं। वे पात्रों की दुर्बलताओं का चित्रण कर और उनका परिस्थितियों से संघर्ष कराकर सुधार की ओर ले जाते हैं। वे मानव के भविष्य के विषय में सदैव आशावादी रहे हैं। 'निर्मला' उपन्यास में यथार्थ का अतिरंजित वर्णन करके भी

शेष आगे-

लेखक महोदय लिखते हैं कि गाँधी जी अक्सर रेल के तिसरे डब्बे में यात्रा करते थे। मैं भी उनके साथ रहता था। गाँधी जी के लिए एक डिब्बा सुरक्षित रहता था। प्रत्येक स्टेशन पर चन्दा वसूली होती थी। पूर्व से ही गाँधीजी के समर्थकों को यह जानकारी प्राप्त हो जाती थी। इसलिए रेलवे स्टेशन पर भारी भीड़ एकट्ठा हो जाती थी। स्टेशन पर गाड़ी रुकने पर अपना हाथ बाहर निकाल देते थे और लोग दिल खोलकर उन्हें दान देते थे। चन्दा में प्राप्त समस्त राशि 'हरिजन सेवक संघ' को भेज दिया जाता था। इस प्रकार लेखक महोदय ने गाँधी जी के यात्रा के सम्बन्ध मे उल्लेखनीय वर्णन किया है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो०, हिन्दी 04/06/21
रा०कृ०सं०महावि० सुरसेना, पूर्णियाँ